IJAER/ March-April 2024/Volume-13/Issue-2 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

गांधीजी द्वारा प्रतिपादित विचारों की वर्तमान व्यवस्था से तुलना

Asha Choudhary
Research Scholar in Political Science
Maharshi Arvind University, Jaipur(Rajasthan).

Dr. pritee Verma
Research Guide, Assistant Professor, Department of Humanities & Social Science
Maharshi Arvind university, Jaipur, (Rajasthan

सार

महात्मा गांधी को साहसी, निस्वार्थ और अहिंसक कार्यप्रणाली के लिए महात्मा (महान आत्मा) के रूप में जाना जाने लगा, जो उनके जीवन जीने के तरीके के साथ-साथ अपने साथी नागरिकों और दुनिया की भलाई के लिए सुधार लाने के उनके प्रयासों की विशेषता थी। इस अध्याय में हम उस ज्ञान को देखते हैं जो एक ऐसे व्यक्ति से प्राप्त किया जा सकता है जो न तो समझने में आसान था, न ही गलती करने या हराने के लिए अजनबी था, लेकिन जो कई लोगों को प्रेरित करता रहा और कई लोगों में रुचि रखता रहा। हम इस व्यक्ति द्वारा प्रस्तावित सीखने के मार्ग का वर्णन करने का प्रयास करते हैं जो एक अत्यंत चतुर रणनीतिज्ञ और रणनीतिकार भी था। विशेष रूप से, हम गांधी की स्वदेशी, स्वराज, सत्याग्रह और सर्वोदय की रचनात्मक दृष्टि को समझाने का प्रयास करते हैं, ये सभी ऐसी संरचनाएँ थीं जिन्हें उन्होंने जीवित अर्थव्यवस्थाओं और जीवित लोकतंत्रों के निर्माण के लिए अपनाया था। उन्होंने हमें सिखाया कि एक व्यक्ति खुद को पारदर्शी और खुला बनने के लिए प्रशिक्षित कर सकता है और निरंतर सुधार के लिए हमेशा प्रयास करते हुए शिक्षा, प्रशिक्षण, रोजगार और समुदाय के बीच तालमेल और सहयोग भी बना सकता है। गांधी देश के लिए एक प्रदर्शन प्रबंधक और परिवर्तन के लिए एक सर्वोच्च व्यावहारिक नेता थे। उनका मानना था कि सत्य, सहिष्णुता, त्याग, आनंद और अत्याचार की अहिंसक अस्वीकृति ही सफल जीवन का सार है।

मुख्य शब्द: *महात्मा गांधी,* ***विचार,***

परिचय

महात्मा गांधी एक शांतिवादी थे जिन्होंने सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन लाया। उन्हें अपने लोगों और संपूर्ण सभ्यता के बीच सबसे महान नेताओं में से एक माना जाता है। वह उस पीढ़ी के सदस्य थे जो फासीवादी नेताओं, साम्यवादी अत्याचारियों और औपनिवेशिक अधिपतियों के शासनकाल में जीवित रहे। दूसरी ओर, स्वराज (स्वतंत्रता और स्व-शासन), सामाजिक व्यवस्था के निचले तबके और महिलाओं के सशक्तिकरण, सामाजिक रूप से विभाजित पहचानों के बीच सांप्रदायिक सद्भाव और नस्लीय भेदभाव के खिलाफ लड़ाई के मुद्दों के बारे में उनके विचारों और दर्शन ने एक सामाजिक-राजनीतिक विकास जो अपेक्षा के विपरीत था और सबसे स्वीकार्य था।

इसके अतिरिक्त, इसने एशिया, अफ्रीका और संयुक्त राज्य अमेरिका के देशों में लाखों लोगों की मुक्ति में सहायता की। भारत के संदर्भ में, अन्य स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा किए गए योगदान के विपरीत, गांधीजी ने

जो सबसे महत्वपूर्ण योगदान दिया, वह सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक चिंताओं और भेदभावों को भारत के युद्ध के व्यापक ढांचे से जोड़ने की उनकी क्षमता थी। ब्रिटिश औपनिवेशिक सत्ता से स्वतंत्रता। शाही सत्ता से स्वतंत्रता की खोज के बारे में अपने विचारों के कारण, गांधी को सबसे प्रभावशाली साम्राज्य-विरोधी बुद्धिजीवियों में से एक माना जाता है। मानव जाति की स्वायत्तता के बारे में उनकी अवधारणाएँ राज्य-केंद्रित और खुले तौर पर राजनीतिक हैं, जिसमें सामाजिक-सांस्कृतिक नींव पर ज़ोर दिया गया है, जिस पर वे स्थापित हैं। गांधी को ज्यादातर "राष्ट्रपिता" के रूप में माना जाता है और यह उनके लिए एक उपयुक्त श्रद्धांजलि है क्योंकि वह भारत को ब्रिटिश उपनिवेश से एक देश में बदलने के लिए जिम्मेदार थे। आर्थिक आत्मनिर्भरता, महिलाओं के सशक्तिकरण, अस्पृश्यता की सामाजिक बुराइयों के खिलाफ लड़ाई और विभिन्न धार्मिक के बीच अंतर को पाटने जैसे क्षेत्रों में "ग्राम गणराज्य" की स्वायत्तता को मजबूत करने और सुनिश्चित करने में इस व्यक्ति का योगदान समुदायों का भारतीय समाज पर महत्वपूर्ण और आलोचनात्मक प्रभाव पड़ा है।

आधुनिक युग में गांधी की विरासत

महात्मा गांधी के बारे में कोई भी बातचीत आमतौर पर उनके व्यक्तित्व और आदर्शों के प्रति एक निश्चित मात्रा में विस्मय के साथ शुरू होगी, और यह शुरुआत करने का एक स्वाभाविक और उचित तरीका है। एक ऐसे व्यक्ति के लिए जिसने शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य, अस्पृश्यता और रंगभेद की सदियों पुरानी प्रथाओं और बहुत लोकप्रिय पश्चिम-केंद्रित आधुनिकीकरण के खिलाफ लड़ने के लिए कई अन्य महान सिद्धांतों के साथ-साथ अहिंसा, सत्य और अपरिग्रह पर धैर्यपूर्वक विश्वास किया और उनका पालन किया। , ऐसी श्रद्धाएँ पूर्णतः अप्राकृतिक नहीं हैं। आदर्श स्थिति यह होगी कि महात्मा गांधी, जिन्हें सबसे प्रसिद्ध व्यक्तियों में से एक माना जाता है, एक दार्शनिक, एक राजनीतिक कार्यकर्ता, एक राजनीतिज्ञ और, इसके अलावा, एक समाज सुधारक के रूप में उनकी भूमिकाओं से कम न हों। इसके आलोक में, यह पुस्तक गांधीजी के व्यक्तित्व की तुलना में उनके विचारों और दर्शन पर अधिक जोर देती है। जहां यह पुस्तक गांधी के विचारों के साथ बातचीत करने का प्रयास करती है, वहीं यह वर्तमान समय में उन सिद्धांतों की प्रयोज्यता की भी जांच करती है।

पूंजी के रूप में कार्य और कौशल

गांधी के अनुसार प्रयास और प्रतिभा पैसे के अधीन नहीं थे, जिन्होंने इस विचार पर जोर दिया कि प्रयास और कौशल भी समान रूप से शक्तिशाली थे। यदि पैसा शक्ति है तो प्रयास भी शक्ति है। इन दोनों में विनाशकारी या नवीन तरीकों से उपयोग किए जाने की क्षमता है। लगभग तुरंत ही, श्रमिक को अपनी शक्ति का एहसास हो जाता है, और वह पूंजीपति का गुलाम बनने के बजाय उसका सह-हिस्सेदार बनने की स्थिति में आ जाता है (गांधी, 1933, पृष्ठ 296)। 1903 में, जब गांधी रेल द्वारा जोहान्सबर्ग से डरबन की यात्रा कर रहे थे,

गांधी, जो कार्य द्वारा सत्य के खोजी थे, का मानना था कि किसी अवधारणा के मूल्य को प्रदर्शित करने का एकमात्र तरीका इसे कार्यान्वित करना है। परिणामस्वरूप, उन्होंने 1904 में फीनिक्स सेटलमेंट और 1910 में टॉल्स्टॉय फार्म जैसे फार्म स्थापित किए, जो दोनों दक्षिण अफ्रीका में स्थित थे। इन फार्मों ने उन्हें निवेश के रूप में श्रम और विशेषज्ञता की अवधारणाओं के साथ प्रयोग करने का मौका प्रदान किया। निम्नलिखित में से एक या अधिक भाषाएँ बोलने वाले व्यक्ति बस्तियों में पाए गए: पुरुष, महिलाएँ और बच्चे जो हिंदू, मुस्लिम,

ईसाई या पारसी धर्म के थे; गोरे या भारतीय लोग; और ऐसे व्यक्ति जो गुजराती, हिंदी, तमिल और अंग्रेजी में से एक या अधिक भाषाएँ बोलते हैं। यह गांधी का तर्क था कि श्रम और कौशल पूंजी थे जिसके कारण दोषियों के बीच उत्पादों का वितरण होता था और जब वे शारीरिक कार्य में लगे होते थे तो निर्देश का प्रावधान होता था। गांधीजी का मानना था

इस प्रकार की शिक्षा मातृ अर्थव्यवस्था के लिए बच्चों और युवाओं को शिक्षित करने का सबसे अच्छा तरीका है, जिसकी विशेषता यह थी कि निर्माता स्वयं ग्राहक बन जाते हैं। इन बस्तियों का प्रबंधन गांधी द्वारा किया गया था, जिन्होंने अपना नेतृत्व इस मूल सिद्धांत पर आधारित किया था कि प्रत्येक व्यक्ति का अंतिम लक्ष्य अपनी क्षमता का एहसास करना है। शारीरिक श्रम के कार्य के दौरान, उन्होंने महसूस किया कि सत्य की स्व-मध्यस्थता वाली खोज में किसी के सच्चे स्व की खोज करने की क्षमता हो सकती है। जब गांधी ने इस बात पर जोर दिया कि प्रत्येक व्यक्ति को यह परिभाषित करना चाहिए कि उसके लिए सत्य का क्या अर्थ है और फिर एक-दिमाग के साथ इसका अभ्यास करें, तो उन्होंने सत्य को सापेक्ष तरीके से माना, जो इस स्थिति का एक दिलचस्प पहलू है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. गाँधी जी के संक्षिप्त जीवन का प्रस्तुतीकरण करना ।

2. गाँधीवाद का विवेचनात्मक अध्ययन

साहित्य का सिंहावलोकन

जब से मनुष्य ने भीतर और बाहर की शक्तियों के बीच असंगति को समझने की संवेदनशीलता को आत्मसात करना शुरू किया तब से साहित्य बाहरी वास्तविकता को समझने के मनुष्य के प्रयासों का कालक्रम है। इस परिप्रेक्ष्य के अनुसार उपन्यास सबसे स्पष्ट साहित्यिक रूप है। यहां व्यक्ति को इतिहास के एक विशेष मोड़ पर बड़ी सामाजिक वास्तविकता के खिलाफ सख्ती से खड़ा किया जाता है और उपन्यास, एक तरह से, बड़ी वास्तविकता को समझने और समायोजित करने के व्यक्तिगत प्रयासों की गाथा बन जाता है। ऐतिहासिक रोमांस, सामाजिक, राजनीतिक यथार्थवाद और मनोवैज्ञानिक मामले के अध्ययन के तीन चक्र भारतीय अंग्रेजी साहित्य सहित सभी साहित्य में कमोबेश समान रूप से अपनाए जाते हैं।

रचनात्मक और आलोचनात्मक कल्पना में गांधी: एक सर्वेक्षण

महात्मा गांधी न केवल एक सार्वभौमिक व्यक्ति हैं, बल्कि अमर भी हैं। भारत के स्वतंत्रता-पूर्व चरण के दौरान, गांधी पहले एक राष्ट्रीय और जल्द ही अत्यधिक राजनीतिक और दार्शनिक महत्व के अंतर्राष्ट्रीय नेता बन गए। गांधीवादी साहित्य सभी कोनों, देशी और विदेशी, में प्रवाहित होने लगा। आज भी साहित्य जगत में गांधी की प्रभावी उपस्थिति बनी हुई है और वास्तव में गांधी की उपेक्षा करने वाला साहित्य आलोचनात्मक ध्यान आकर्षित करता है। हालाँकि आज़ादी के बाद के दौर में उनके व्यवहार में आज़ादी से पहले के दौर की तुलना में बदलाव आया है, फिर भी, यह तय है कि गांधी को लेखन से कभी अलग नहीं किया जा सकता।

विदेश में शिक्षा व विदेश में ही वकालत

अपने १९वें जन्मदिन से लगभग एक महीने पहले ही ४ सितम्बर को गांधी यूनिवर्सिटी कॉलेज लन्दन में कानून की पढाई करने और बैरिस्टर बनने के लिये चले गये। भारत छोड़ते समय जैन भिक्षु बेचारजी के समक्ष हिन्दुओं को मांस, शराब तथा संकीर्ण विचारधारा को त्यागने के लिए अपनी अपनी माता जी को दिए गये एक वचन ने उनके शाही राजधानी में बिताये गये समय को काफी प्रभावित किया। हालांकि गांधी जी ने अंग्रेजी रीति रिवाजों का अनुभव भी किया जैसे उदाहरण के तौर पर नृत्य कक्षाओं में जाने आदि का। फिर भी वह अपनी मकान मालकिन द्वारा मांस एवं पत्ता गोभी को हजम.नहीं कर सके। उन्होंने कुछ शाकाहारी भोजनालयों की ओर इशारा किया। अपनी माता की इच्छाओं के बारे में जो कुछ उन्होंने पढा था उसे सीधे अपनाने की बजाय उन्होंने बौद्धिकता से भोजन का अपना भोजन स्वीकार किया।

गाँधीवाद की भूमिका

2 अक्टूबर 2019 भारत के लिए एक महान दिन है, क्योंकि देश राष्ट्रपिता मोहन दास करमचंद गांधी की 150वीं जयंती मना रहा है। इतना ही नहीं, बल्कि दुनिया गांधीजी द्वारा जीवन भर प्रचारित अहिंसा की सच्ची भावना को सम्मान और स्वीकृति देने के लिए इस शुभ दिन को अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में मनाती है। गांधीवाद की शुरुआत प्रसिद्ध पंक्ति से होती है 'सादा जीवन और उच्च विचार'।

यह स्वयं इस तथ्य का भी सूचक है कि किसी व्यक्ति के जीवन को आकार देने में उसके विचारों की बहुत बड़ी भूमिका होती है। इसीलिए गांधीवाद सभी के लिए सरल प्रतीत होता है लेकिन वास्तविक अर्थों में इसे दैनिक जीवन में अपनाना कठिन है। उदाहरण के लिए, जीवन की कठिन परिस्थितियों में सच्चा, सहिष्णु, अहिंसक बने रहना और दूसरों का सम्मान करना बहुत अधिक प्रतिबद्धता की आवश्यकता है।

गांधीजी की धर्म की अवधारणा

गांधी ने धर्म को इस रूप में परिभाषित किया, जो हमें हमारे निर्माता के आमने-सामने लाता है । गांधीजी का मानना था कि धर्म वह है जो सभी कार्यों में व्याप्त है। उन्होंने कहा, इसका मतलब है, "ब्रह्मांड की व्यवस्थित नैतिक सरकार में विश्वास।" यह धर्म हिंदू धर्म, इस्लाम, ईसाई धर्म आदि से परे है। यह उनका स्थान नहीं लेता। यह उनमें सामंजस्य स्थापित करता है और उन्हें वास्तविकता प्रदान करता है'' । धर्म, जैसा कि वह इसे समझता है, मानव स्वभाव में एक स्थायी तत्व है जो पूर्ण अभिव्यक्ति पाने के लिए कोई भी बड़ी कीमत नहीं मानता है

धर्मों पर गांधीजी के विचार

गांधीजी दुनिया के सभी धर्मों को समान सम्मान और रुचि देते थे। उनके लिए, सभी धर्म कमोबेश सच्चे हैं, एक ही ईश्वर से आगे बढ़ते हैं और एक ही बिंदु पर मिलते हैं। विभिन्न धर्मों को मानने वाले अन्य धर्मों के लोगों के साथ उनकी कुछ दिलचस्प बातचीत हुई। गांधी सभी धर्मों में बुनियादी एकता, सादगी और मानवता को सभी धर्मों की अनिवार्य शिक्षा मानते थे।

इस्लाम पर विचार

गांधीजी ने इस्लाम को "शांति, प्रेम और सबसे बढ़कर, मनुष्य के भाईचारे का धर्म" माना। वह इसके केवल ईश्वर में विश्वास और ईश्वर के प्रति अयोग्य समर्पण के सिद्धांतों से बहुत प्रभावित थे। गांधीजी का दृढ़ विश्वास था कि उनके कुछ अनुयायियों द्वारा तलवार उठाने का न तो पवित्र पुस्तक "कुरान" की शिक्षा से कोई लेना-देना है और न ही यह उसके अनुरूप है। उन्होंने इस्लाम पर कट्टरता के आरोपों की भी निंदा की, क्योंकि पवित्र पुस्तक के कई अंश धार्मिक सहिष्णुता और शांति की बात करते हैं। गांधी ने टिप्पणी की थी कि, "मुसलमानों के सबसे कुलीन लोगों के साथ मेरे जुड़ाव ने मुझे यह देखना सिखाया है कि इस्लाम तलवार की ताकत से नहीं, बल्कि अपने संतों और फकीरों की एक अखंड श्रृंखला के प्रार्थनापूर्ण प्रेम से फैला है"।

ईसाई धर्म पर गांधी के विचार

गांधी ईसाई धर्म से बहुत प्रभावित और प्रेरित थे क्योंकि इसमें प्रेम का सुसमाचार और बलिदान की भावना निहित थी। उनका सत्याग्रह, जो बुराई पर विजय पाने का एक सशक्त अहिंसक साधन था, ईसाई धर्म के कुछ सिद्धांतों पर आधारित था। शत्रु पर विजय पाने के लिए व्यक्तिगत पीड़ा का सुसमाचार एक सबक था जो द न्यू टेस्टामेंट के उनके पाठन से सीखा गया था। वह 'सरमन ऑन द माउंट' से बहुत प्रभावित हुए, जिसे उन्होंने 'दुनिया के लिए ईसाई धर्म का उपहार' माना। उनके लिए यह लगभग 'गीता' पढ़ने जैसा था। उनका मानना था कि ईसाई धर्म का विशेष योगदान सक्रिय प्रेम का है। कोई भी अन्य धर्म इतनी दृढ़ता से नहीं कहता कि ईश्वर प्रेम है''।

जैन धर्म और बौद्ध धर्म पर गांधी के विचार

गांधी जैन और बौद्ध धर्म को हिंदू धर्म के समान ही देखते थे और उन्हें एक-दूसरे से स्वतंत्र नहीं मानते थे। गांधीजी पर जैन धर्म का प्रभाव सबसे अधिक दिखाई दिया। अहिंसा और उपवास की उनकी अवधारणाएँ अधिकतर इसकी परंपराओं के अनुरूप थीं। गांधीजी को अपने जीवन के आरंभ में जैन भिक्षुओं के साथ अपने पिता की बातचीत का हिस्सा बनने का सौभाग्य मिला था। धर्म के नैतिक और आध्यात्मिक आयाम ने सभी प्राणियों के प्रति गांधीजी के अहिंसा के विचारों को मजबूत किया। जैन धर्म से संबंधित अन्य नैतिक गुण जैसे पवित्रता, पवित्रता, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, करुणा, सत्य, चोरी न करना, अपरिग्रह का गांधी पर सीधा प्रभाव पड़ा है

हिंदू धर्म पर गांधी के विचार

डी.एम.दत्ता लिखते हैं, गांधी का मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति सांस्कृतिक और भौतिक वातावरण में निश्चित वंशानुगत प्रवृत्तियों के साथ पैदा होता है और इसलिए, एक विशेष तरीके से विकास करने में सक्षम होता है। जिस धार्मिक विरासत के साथ एक व्यक्ति का जन्म हुआ है, उसकी उपेक्षा करना व्यर्थ और अनावश्यक है।'' विभिन्न धर्मों पर अपने व्यापक अध्ययन, सभी धर्मों के लोगों के साथ अपनी बातचीत और विभिन्न धर्मों से जुड़े गुणों के बारे में अपनी धारणा के बावजूद, गांधी ने स्वीकार किया कि हिंदू धर्म उनके लिए सबसे उपयुक्त होगा। हालाँकि इस धर्म की अपनी विनाशकारी प्रथाएँ और पूर्वकल्पित धारणाएँ थीं, यह उपनिषद, वेद और गीता जैसे विभिन्न ग्रंथों में उद्धृत आवश्यक नैतिक गुण और सिद्धांत हैं जिन्होंने गांधी को सबसे अधिक शांत किया

शिक्षण विधि, पाठ्यक्रम

गाँधी जी ने शिक्षण से संबंधित अपनी अवधारणा कुछ इस प्रकार प्रस्तुत अथवा स्पष्ट की है; जैसे— करके सीखना, अनुभव के द्वारा सीखना, लिखने से पहले पढ़ना सीखना, वर्णमाला के अक्षरों को सिखाने से पहले बालक को ड्राइंग सीखाना, अधिगम की प्रक्रिया में समन्वय बनाना अथवा स्थापित करना, शिक्षा के लिए उचित प्रशिक्षण पर बल, उद्योगों को शिक्षा का केन्द्र मानना, शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होनी चाहिए; वहीं दूसरी ओरशिक्षक एवं पाठ्यपुस्तकों के संदर्भ में गाँधी जी का विचार है कि जो अध्यापक पुस्तकों से पढ़ाता है वह अपने विद्यार्थियों को सत्य एवं यथार्थ का ज्ञान नहीं कराता । वह तो स्वयं ही पुस्तकों का दास है ।

- क्रिया-प्रधान पाठ्यक्रम पर बल अर्थात् पाठ्यक्रम में श्रम के महत्त्व पर बल ।
- प्राथमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के लिए एक समान पाठ्यक्रम ।
- पाठ्यक्रम के विषय - मातृभाषा, गणित, बेसिक शिल्प, समाज-शास्त्र, कला, संगीत, शारीरिक शिक्षा, गृहविज्ञान (बालिकाओं के लिए) एवं विज्ञान आदि ।

बुनियादी शिक्षा के पाठ्यक्रम के अन्तर्गत आधारभूत शिल्प; जैसे- लकड़ी का काम, कताई, बुनाई एवं कढ़ाई, मिट्टी का काम, कृषि संबंधी कार्य, चमड़े का काम, बागवानी, मछली पालन एवं स्थानीय आवश्यकताओं से संबंधित कार्य एवं शिल्प आदि

निष्कर्ष

भारतीय संस्कृति के अनुसार, महात्मा गांधी को "देश के पिता" के रूप में सम्मानित किया जाता है। सामाजिक न्याय के लिए अभियान चलाने के उनके अहिंसक तरीके, सभी धर्मों को स्वीकार करना और एक-दूसरे से मतभेद रखने वाले समुदायों को एक साथ लाने की उनकी क्षमता ऐसी चीजें हैं जिनके लिए लोग उन्हें सबसे ज्यादा याद करते हैं। सत्याग्रह की अवधारणा ने मार्टिन लूथर किंग जूनियर सहित विभिन्न देशों में नागरिक अधिकार कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणा स्रोत के रूप में काम किया है। आज, गांधी को पूरी दुनिया में सबसे प्रिय और प्रसिद्ध व्यक्तित्वों में से एक माना जाता है। जनवरी 1997 में उनके सम्मान में आयोजित एक समारोह में गांधी की राख को भारत के इलाहाबाद में गंगा नदी में प्रवाहित किया गया था। यह कार्यक्रम गांधी की हत्या के आधी सदी बाद हुआ था। गांधी जी के परपोते तुषार गांधी ने अवशेषों को वितरित करने की प्रक्रिया की अध्यक्षता की, क्योंकि सैकड़ों दर्शकों ने उस व्यक्ति की याद में नारे लगाए, जो थोड़े समय के लिए, एक ऐसे देश को एक साथ लाने में सफल रहे जो ऐतिहासिक रूप से धार्मिक आधार पर विभाजित हो गया था।

संदर्भ

1. अरविन्द पवन कुमार, "वर्तमान समय में गांधी जी के विचारों की प्रासंगिकता", गांधी जी पर आलेख, 28 जनवरी 2010
2. ओल्डेनबर्ग एच., "बुद्ध: उनका जीवन, शिक्षाएँ और उनकी व्यवस्था", कलकत्ता, 1927, पृष्ठ 64।

3. कौशिक आशा, "नई सदी के लिए गांधी", रावत प्रकाशन, जयपुर, पृष्ठ 108।

4. गांधी, "हिंद स्वराज", अहमदाबाद, 1938, पृष्ठ 35

5. शूमाकर ई.एफ., "स्मॉल इज ब्यूटीफुल", ऑक्सफोर्ड, 1973।

6. हरिजन, 7 अप्रैल, 1946

7. यंग इंडिया, 8 अगस्त, 1931

8. गांधी, "येरवडा मंदिर से", नवजीवन, अहमदाबाद, पृष्ठ 66

9. गांधी, "महात्मा गांधी के भाषण और लेखन", मद्रास जे.ए. नेशन, पृष्ठ 344

10. गांधी, हिंद स्वराज, पृष्ठ 226

11. हरिजन, 7 सितम्बर 1935

12. यंग इंडिया, 2 जुलाई 1931, पृष्ठ 286

13. बहरवाल डॉ. मनोज कुमार, "भारतीय राजनीतिक चिंतक", हिमांशु प्रकाशन, उदयपुर, 2014, पृष्ठ 397

14. शर्मा डॉ. अपर्णा, "गांधी-वाणी", पारीक बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर, 2010, पृष्ठ 21-22।

15. बहरवाल डॉ. मनोज कुमार, "भारतीय राजनीतिक चिंतक", हिमांशु प्रकाशन, उदयपुर, 2014, पृष्ठ 398

16. कौशिक आशा, "नई सदी के लिए गांधी", रावत प्रकाशन, जयपुर, पृष्ठ 90।

17. गांधीजी के संग्रहित कार्य, खंड-15, पृष्ठ 312

18. यंग इंडिया, दिसंबर 31, 1931, पृष्ठ 427-428